आरती श्रीरामायण जी की

आरती श्रीरामायण जी की ।
कीरति कलित ललित सिय-पी की ।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद ।
बालमीक बिज्ञान बिशारद ।।

शुक सनकादि शेष अरु शारद ।
बरनि पवनसुत कीरति नीकी ।।

गावत वेद पुरान अष्टदस ।
छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस ।। आरति

मुनि जन धन सन्तन को सरबस ।
सार अंस सम्मत सबही की ।। आरति

गावत शंतत शम्भु भवानी ।
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ।। आरति

व्यास आदि कविबर्ज बखानी ।
कागभुसुंडि गरूड़ के ही की ।। आरति

कलिमल हरनि विषय रस फीकी ।
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।।

दलन रोग भव मूरि अमी की ।
तात मात सब बिधि तुलसी की ।।

श्रीराम-स्तुति

नीलाम्बुज श्यामलकोमलांगं

सीता समारोपित वाम भागम् ।
पाणौ महासायक चारुचापं
नमामि रामं रघुवंश नाथम् ।।

श्री जानकी-वन्दन

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम् ।
सर्व श्रेयस्कारीं सीतां नतोहं रामवल्लभाम् ।।

विवरण

जो प्रेम एवं कलाओं को सीखाने वाला है, सुन्दर है एवं सीता के पति श्री राम जी का वर्णन करने वाला है, ऐसे श्री रामायण जी की हम आरती करते हैं ।

ब्रह्मा, मुनि एवं नारद आदि इनकी गाथा गाते हैं, बाल्मीकि ने इस रामायणके विशेष ज्ञान को विस्तृत किया है, शुक, सनक और शारदा आदि जिनके शेष हैं, पवनसुत हनुमान के प्रेम का जिसमें वर्णन किया गया है, ऐसे रामायण को आठों दिशाएँ, वेद ऐवं पुराण गायन करते हैं ।

जिसमें छहों शास्त्र एवं सभी ग्रन्थों का रस समाहित है, ऐस रामायण जी की हम आरती करते हैं । मुनिजन एवं सन्तजन का ये रामायण धन है । यह रामायण सबकी रक्षा करनेवाला एवं सबके प्रति समानभाव रखने वाला है । ऐसे रामायण जी की हम आरती करते हैं ।

इस रामायण में भगवान शंकर एवं पार्वती जी का भी वर्णन है, जिनकी गाथा संत लोग गाते हैं, ऐसे रामायण की मुनि एवं विशेष ज्ञान रखने वाले ज्ञानी लोग आरती करते हैं । महर्षि ब्यास आदि एवं कवियों के द्वारा जिस रामायण की बखान की जाती है, कागभुसुंडि एवं गरुड़ (भगवान विष्णु की सवारी) के हृदय का जिसमें बखान किया गया है, ऐसे रामायण जी की हम आरती करते हैं ।

यह रामायण हमारे दुर्विचारों का हरण करता है, इसमें सीता जी के श्रृंगार का सुन्दर वर्णन किया गया है, यह रामायण हमारे सभी रोग का नाश करता है एवं भवसागर पार लगाता है । इसमें माता कौसल्या एवं श्री राम जी तथा तुलसी का भी अदभुत वर्णन किया गया है ऐसे रामायण जी की हम आरती करते हैं ।

श्रीराम स्तुति

नीले आकाश के समान जिनका साँवला एवं कोमल अंग हैं, जिनके बाएँ भाग में सीता जी विराज रही हैं, जिनके दोनों हाथ धनुष एवं बाण चलने में महारथी हैं, ऐसे रघु के वंशज श्रीराम जी एवं हमारे स्वामी को हम शीश नवाते हैं ।

श्री जानकी - वन्दन

जो सारे संसार की शक्ति की देवी हैं तथा दुष्टों का संहार करने वाली हैं, जो हमारे मन के सभी दुखों को हरने वाली हैं, सभी श्रेय को करने वाली हैं, ऐसे श्री राम जी की प्रिया सीता जी को मस्तक झुका कर प्रणाम हैं ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.